CONTENTS

INDEX

TITLE	Page(s)
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए एक नई और दूरदर्शी दृष्टि पर एक अध्ययन – **मीनू सचदेवा, डॉ. शिवपाल सिंह**	**02**
हिन्दी भाषा एवं संस्कृति का नई शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में अध्ययन –**विनीत कुमार आर्य, डा0 रामबाबू सिंह, डॉ0 मीनाक्षी द्विवेदी**	**16**
शिक्षा नीति **2020:** संवैधानिक प्रावधानों पर अध्ययन – **शिवानी जैन**	**22**
शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की भूमिका - **पूजा रानी**	**28**
शिक्षक शिक्षा और शिक्षक दक्षताओ को पेशेवर बनाना - **श्री मन्दीप कुमार**	**33**

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
Vol: 8, ISSUE: 1, No: 29 July – September, 2022

शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की भूमिका

*पूजा रानी (शोधार्थी) **डॉ. शैल ढाका (शोध निर्देशिका)
स्कूल ऑफ एजुकेशन
शोभित इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, मोदीपुरम, मेरठ

सारांश

सूचना एवं संचार तकनीकी वर्तमान समय में शिक्षण - प्रक्रिया को बेहतर बनाने का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। 21वीं सदी को सूचना एवं संचार तकनीकी का युग कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।सूचना एवं संचार तकनीकी के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आविष्कारों, अनुसंधानों ने शिक्षा को शिक्षक, वह शिक्षार्थी दोनों के लिए ही सरल, रुचिकर और प्रभावशाली बनाया है।

कुंजी - शिक्षक , सूचना , संचार, तकनीकी ।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के विकास में उस राष्ट्र की उन्नत तकनीक तथा उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी भावी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा का निर्माण करता है क्योंकि शिक्षा मानव के विकास का मूल आधार होती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास करके उसे एक सभ्य, सुसंस्कृत एवं एक योग्य नागरिक बनाया जाता है शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक कुशल अध्यापक की होती है क्योंकि समाज एवं शिक्षा दोनों में ही शिक्षक का स्थान सर्वोपरि है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है - " समाज में अध्यापक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक एवं तकनीकी कुशलता का हस्तांतरण करने का केंद्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्वलित रखने में सहायता देता है। "

एक शिक्षक संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया की सफलता का प्रमुख आधार होता है क्योंकि शिक्षक ही ज्ञान को हस्तांतरित करते हैं। वैज्ञानिक युग में तकनीकी विकास के साथ-साथ सूचना के क्षेत्र में भी विस्फोट हुआ है। यह सूचना विस्फोट इतनी गति से हो रहा है कि साक्षर व्यक्ति भी तकनीकी ज्ञान के बिना अपने आप को निरक्षर महसूस कर रहे हैं क्योंकि वे स्वयं को इस सूचना विस्फोट का सामना करने में सक्षम नहीं पा रहे हैं। इस समस्या का समाधान करने का सरल तरीका यही है कि सूचना प्रौद्योगिकी की निपूर्णता सूचना तकनीकी ज्ञान का प्राप्त करना। ती से बढ़ते ज्ञान को संचित करने, व्यवस्थित करने, नियंत्रण एवं प्रेषित करने के लिए वर्तमान समय में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के ज्ञान एवं उपयोग की महती आवश्यकता है सूचना शब्द को हम कई प्रकार से समझ सकते हैं किसी विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त करना। और उसका जानकारी को दूसरों तक पहुंचाना जिस प्राप्त जानकारी या तथ्यों के आधार पर किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है।

सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ

सूचना प्रौद्योगिकी में दो शब्द सूचना और प्रौद्योगिकी सम्मिलित है यदि हम इन दोनों शब्दों के अर्थ समझ लेते हैं तो हम सूचना प्रौद्योगिकी के अर्थ को भली प्रकार समझ सकते हैं।

सूचना

सूचना शब्द का संबंध विज्ञान के किसी ऐसे संचरण अथवा संप्रेषण अथवा वर्णन से है, जो कि तथ्यों, आंकड़ों अथवा मत हो किसी भी माध्यम से प्रस्तुत करता हो इसका माध्यम मौलिक, संख्यात्मक, वर्णनात्मक रेखा - चित्रात्मक दृश्य श्रव्य आदि हो सकता है।

प्रौद्योगिकी

प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोगात्मक रूप है। अथवा तकनीकी ज्ञान एवं सूचना को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित करके संप्रेषण के योग्य बनाती है।

सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान और तकनीकी का मिश्रण है। सूचना तकनीकी में मुख्य तत्व निहित होते हैं - हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और इंटरनेट।

प्रोफेसर जेम्स के शब्दों में

"सूचना का अर्थ है सही जानकारी प्राप्त होना। "

यूनेस्को के अनुसार

"सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसी वैज्ञानिक, तकनीकी अभियंत्रिकी व्यवस्था और प्रबंध के तकनीक है, जिसका प्रयोग और संबंध सूचना को व्यवस्थित करने और सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक मुद्दों के साथ किया जाता है। "

किसी विचार या तथ्य को जानना एवं उसे उसी रूप में आगे पहुंचाना जिस रूप में वह है और ग्रहणकर्ता भी उसे उसी रूप में ग्रहण कर सकें जिस रूप में उसे कहा गया है। सूचना एवं संचार तकनीकी कहलाता है।

सूचना एवं संचार तकनीकी के साधन –

सूचना संप्रेषण में जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है उनमें से कुछ महत्वपूर्ण साधन निम्न प्रकार है -

1 - मुद्रित संचार साधन -

पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथों, पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएं , वाचनालय तथा अन्य सार्वजनिक वाचनालय।

2 - प्रत्यक्ष जानकारी देने वाले साधन –

बाग बगीचे ,नदी, पर्वत, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थान, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक अनुभव इत्यादि।

3 - दृश्य श्रव्य साधन -

चित्र, चार्ट, रेडियो, टेलीविजन आदि।

उपर्युक्त के अतिरिक्त शिक्षकों, सहपाठियों,अभिभावकों , सहकर्मियों, परिजनों तथा समाज के सदस्यों द्वारा भी औपचारिक व अनौपचारिक रूप से सूचनाएं प्राप्त होती है।

शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के लाभ

वर्तमान समय में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शिक्षा जगत से जुड़ा हर व्यक्ति संचार के अभाव में अपनी ज्ञान पिपासा को शांत नहीं कर सकता। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग व्यापकता ग्रहण कर रहा है। आज किसी एक विषय पर संबंधित अनेक शिक्षाविदों के विचार और ज्ञान का इंटरनेट पर लाभ उठाया जा सकता है। शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग से यह अर्थ है कि इसके द्वारा शिक्षकों में सीखने की प्रक्रिया को विकसित किया जाए और इसके साथ-साथ उनके प्रशिक्षण कार्यों को सफलतापूर्वक करने में सहयोग किया जाए।

वर्तमान समय में जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता जा रहा है इसमें से वैसे वैसे शिक्षकों तथा छात्रों की शिक्षा की पाठ्यपुस्तक संबंधी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं और इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए शिक्षक तथा छात्रों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का सहारा लेना पड़ता है, क्योंकि इसके माध्यम से हुए शिक्षा के पाठ्य वस्तु से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी को सरलता से प्राप्त कर सकते हैं।

1 - विद्यार्थियों के लिए उपयोगी

विद्यार्थियों के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग निम्नलिखित कार्यों में हो सकता है -

⇒ विद्यार्थी सूचना के साधनों से परिचित हो सकेंगे।

⇒ सूचनाओं को संयक रूप से एकत्रित कर सकेंगे।

⇒ सूचना के एकत्रीकरण के पश्चात आवश्यकतानुसार उपयुक्त अवसर पर उनके उपयोग का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

⇒ सूचना एवं संचार तकनीकी द्वारा भी अपनी समस्या समाधान की योग्यता और निर्णय क्षमता का प्रशिक्षण ग्रहण कर सकेंगे।

2 - अध्यापकों के लिए उपयोगी

सूचना एवं संचार तकनीकी से अध्यापकों को निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो सकते हैं -

⇒ सूचना एवं संचार तकनीकी शिक्षकों को उनके दायित्व को निभाने में सहायता प्राप्त करती है।

⇒ प्रभावशाली शिक्षण हेतु विभिन्न प्रकार की सूचना सूचनाओं, आंकड़े और जानकारी की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से सूचना एवं संचार तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

⇒ विद्यार्थियों को विज्ञान में सूचना के साधनों से अवगत कराकर शिक्षक अपना कार्यभार को कुछ कम कर सकते हैं।

⇒ शिक्षण मशीन, कंप्यूटर निर्देशित अधिगम सामग्री और अभिक्रम अभिक्रमित पाठ्य पुस्तकें आदि के द्वारा वह अपना कार्य अपेक्षाकृत अधिक अच्छे ढंग से कर सकते हैं।

3 - मार्ग दर्शकों के लिए उपयोगी

निर्देशन एवं परामर्श सेवाएं उनका संचालन विद्यालय परिसर में हो या अन्य संस्थाओं में, सूचना एवं संचार तकनीकी हमेशा ही सहायक सिद्ध हो सकती है। विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत, व्यावसायिक , शैक्षिक सूचना, आंकड़ों, जानकारी एवं संप्रेषण की निरंतर आवश्यकता रहती है।

इसीलिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से विश्वसनीय एवं वैध आंकड़े तथा पूर्ण जानकारियां उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

4 - शैक्षिक नियोजकों एवं प्रशासकों के लिए उपयोगी

सूचना एवं संचार तकनीकी नियोजक एवं प्रशासन से संबंधित विभिन्न कार्यों की दृष्टि से नियोजकों एवं प्रशासकों के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकती है। ये कार्य निम्नलिखित है -

⇒ शिक्षा संबंधी गतिविधियों का ठीक प्रकार से संचालन करने में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी मूल्यवान सिद्ध होती है।

⇒ किसी भी प्रकार का योजनाबद्ध कार्य बिना उपयुक्त सूचना, जानकारी एवं आंकड़ों के अभाव में पूरा नहीं हो सकता, जैसे - छात्रों को किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश देना, परीक्षाएं

आयोजित कराना इत्यादि, जैसे - सभी कार्य सूचना एवं संचार तकनीकी की सहायता से सही प्रकार से हो सकते है।

5 - विदेशी भाषाओं का अधिगम

सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग विदेशी भाषाओं को सीखने के लिए भी अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है। अर्थात हम कह सकते हैं कि सूचना एवं संचार तकनीकी शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र पर अपना प्रभाव डाल रही है। 21वी सदी को यदि हम सूचना तकनीकी का युग कहे तों तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आजकल ई - बिजनेस , ई - गर्वनस, जिस प्रकार चलन है। वैसे ही ई - एजुकेशन पर भी अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। सूचना एवं संचार तकनीकी को मल्टीमीडिया पैकेज, इमेज, इंटरनेट आदि ने बहुत ही व्यापक और बहुमूल्य बना दिया है। शिक्षक वर्तमान समय में इसका शिक्षा में अत्यधिक प्रयोग कर रहे हैं ताकि उनका शिक्षण कार्य अत्यधिक प्रभावशाली बन सके। शिक्षा में तकनीकी साधनों का उपयोग करने से शिक्षार्थी शिक्षण में अत्यधिक रुचि लेते हैं। सूचना एवं संचार तकनीकी वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में की जा रही है।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे. सी . व कुलश्रेष्ठ एस. पी. -" शैक्षिक तकनीकी एवं कंप्यूटर अनुदेशन ", अग्रवाल पब्लिकेशन, संस्करण - 2018 - 2019।
- गोयल, हेमंत कुमार, व सिंह, सौरभ - " कंप्यूटर शिक्षा " प्रकाशक : विनय रखेजा, संस्करण - 2008।
- श्रीवास्तव , सी. एवं सिंह जे . (2015) " माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का समीक्षात्मक अध्ययन " नई शिक्षा पद्धति, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा , पृष्ठ संख्या 41 - 43।
- शर्मा, विवेक व गोदारा, डॉ. राजेंद्र " शिक्षक शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन "इंटरनेशनल जर्नल आफ अप्लाइड रिसर्च, पृष्ठ संख्या 70 - 72।